महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(बिहार के समस्तीपुर जिला के विशेष संदर्भ में)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर,
दरभंगा के अन्तर्गत
समाजशास्त्र विषय में
पी–एच.डी. उपाधि हेतु उपस्थापित

शोध–प्रारूप

वर्ष–2024

शोधार्थी

शालिनी प्रिया

वर्ग क्रमांक–04

PAT 2021-22

PAT Roll No.- 22190176

पर्यवेक्षक

Scanned with OKEN Scanner

1. शोध–शीर्षक (Topic of Research):

महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(बिहार के समस्तीपुर जिला के विशेष संदर्भ में)

2. शोध समस्या का कथन (Statement of the Research Problem)

प्रस्तुत शोध कार्य 'महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका' पर केन्द्रित है। यह एक जटिल एवं व्यापक क्षेत्र का विषय है। इसके अध्ययन में अनेक तरह की कठिनाइयों का आना स्वाभाविक है क्योंकि प्रस्तुत विषयवस्तु पर अभी तक कोई विशेष अध्ययन नहीं हुआ है। ऐसा नहीं है कि भारत के साथ–साथ प्रदेश में महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रयास नहीं हुए। हमारे देश में महिला शक्ति को बल देकर महिलाओं के उन्नयन के प्रयास बराबर जारी है, किन्तु कई प्रकार की भेदभाव की प्रवृतियाँ सदैव आड़े आती रही हैं। हमारा संविधान सभी नागरिकों के साथ–साथ महिलाओं को भी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक न्याय प्रदान करता है। संविधान निहित रूप से उम्मीद रखता है कि सरकार सभी कमजोर वर्गो जिसमें महिलाएँ भी शामिल है, की स्थिति सुधारने के लिए विशेष प्रयत्न करेगी। सरकार ने अलग–अलग अधिनियमों द्वारा महिलाओं से संबंधित कानून बनाए है। समय–समय पर इनमें संशोधन भी हुए हैं। साथ ही कई योजनाएँ चालू किए गए लेकिन इन सबके बावजूद महिला सशक्तिकरण का सपना पूरा नहीं हो सका है। परन्तु सरकार द्वारा चालू की गई प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना महिलाओं के सशक्तिकरण में मील का पत्थर साबित होगी। महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना की किस प्रकार की भूमिकाएँ रही

Scanned with OKEN Scanner

हैं, इन्हीं समस्या से संबंधित तथ्यों को इस शोध के अन्तर्गत उजागर करने का विनम्र प्रयास किया जाएगा।

3. शोध विस्तार (Research Coverage Theme & Area)

यह सर्वविदित है कि हमारे देश की जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा महिलाओं का है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को स्वीकार किया गया है, क्योंकि महिला एवं पुरूष विकास की गाड़ी के दो पहिए हैं। महिलाएँ राष्ट्र के विकास में उतना ही महत्व रखती हैं जितना कि पुरूष। अतः देश का समग्र विकास महिलाओं के विकास एवं सशक्तिकरण के बगैर संभव नहीं हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 1210569573 है। इसमें 623121843 पुरूष तथा 587447730 महिलाओं की है। वे महिलायें न केवल आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि शेष आधी जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विकास में भी योगदान देती है। आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान रहा है। फिर भी आज इक्कीसवीं सदी में महिलाएँ पिछड़ी व उपेक्षित रही हैं। देश के विकास में महिलाओं की सहभगिता व समाज की उन्नति में महिलाओं के महत्व को स्वीकार करते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि– "जिस प्रकार एक पक्षी एक पंख के सहारे नहीं उड़ सकता उसी प्रकार समाज तब तक उन्नति नहीं कर सकता जबतक समाज की सभी गतिविधियों में महिलाओं को शामिल न किया जाए।" इसलिए महिला सशक्तिकरण एक ज्वलंत पहलू बनकर सामने आया है।

सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाएँ निर्णय लें, उसे अमल में लाएं और सामाजिक स्वीकृति दिलाए। समाज के विभिन्न वर्गो तक निर्णय को पहुँचाए। स्त्री के लिए यह भी जरूरी है कि जीवन पर स्वयं नियंत्रण हों। वह पिता, पति या बेटे के नियंत्रण में न रहे, यह भाव होना चाहिए। किसी भी काम में उसकी भागीदारी

Scanned with OKEN Scanner

बराबर की हो। कोई घर, परिवार जिन चीजों से बनता है जिन विचारों पर खड़ा होता है, उस पर आपका नियंत्रण होना चाहिए। यही नियंत्रण परिवेश और समुदाय पर भी लागू होना चाहिए। भारतीय परम्परा में जैविक या लैंगिक अंतर के आधार पर स्त्री और पुरूष को अलग किया गया है। जीवन में सामाजिक तौर–तरीके और कार्य–व्यापार के अलग–अलग मापदण्ड तय किए गए हैं लेकिन सामाजिक परम्परा का निर्माण तो पुरूष वर्ग ने ही किया है। पुरूषों को जो उचित लगा अपने लिए जो भी तर्कसंगत, सुविधाजनक लगा, उसके हिसाब से नियम निर्धारित कर लिए। जरूरत इस बात की थी कि शक्ति के रूप में व्यावहारिक रूप में लागू करते, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। यही तत्व स्त्री सशक्तिकरण में बड़ी बाधा है। पुरूष वर्ग ने स्त्री की जो आदर्शवादी छवि निर्मित की है उसे तोड़ना होगा, क्योंकि यह स्त्रियों पर लादा गया है। इस आदर्श के पीछे ही भेदभाव और उत्पीड़न छिपा है जिसे सामाजिक मूल्य कहा जाता है और उसी मूल्य के भीतर लैंगिक भेदभाव है। विकास का अर्थ स्त्री–पुरूष के लिए अलग–अलग अर्थों में भी न्यायसंगत होगा। उसे अलग–अलग अर्थो में ही स्वीकृति मिलनी चाहिए तभी सशक्तिकरण होगा। संसद या पंचायत को उदाहरण के तौर पर लिया जा सकता है। आज भी कहा जाता है कि स्त्रियाँ स्वयं निर्णय नहीं लेती, बल्कि उसके पिता, पति और पुत्र निर्णय लेते है।

महिलाओं को सबल बनाना ही सतत् विकास की नींव है। समर्थ होने पर ही महिलाएँ अपना जीवन–यापन सही ढंग से कर प्रगति कर सकती हैं। सबल होने पर ही महिलाओं में आत्मविश्वास एवं लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता आती है। प्रतिबद्धता आने पर ही महिलाएँ अपनी आशा आकांक्षाएँ स्वप्न और परिकल्पनाओं को पूरा कर भविष्य के प्रति जागरूक बन सकती हैं। जागरूकता आने पर ही महिलाएँ राष्ट्र और समाज के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान दे सकती हैं। राष्ट्र के उत्थान एवं समाज के बहुमुखी विकास के लिए यह जरूरी है कि महिलाओं को सशक्त

Scanned with OKEN Scanner

और उन्नति के समुचित अवसर दिलाए जाएँ एवं उन्हें शोषण अत्याचार कुपोषण, भेदभाव तथा मानसिक प्रताड़ना से बचाया जा सके।

महिलाओं को सभी तरह के शोषण अत्याचार एवं प्रताड़ना एवं उन्हें सर्वांगीण रूप से सशक्त बनाने के लिए हीं सुकन्या समृद्धि योजना का शुभारम्भ हमारे देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा 22 जनवरी 2015 को बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तहत किया गया। इस योजना के अंतर्गत देश की बेटियों के लिए बचत खाता खोला जाता है। इस योजना को सुकन्या समृद्धि खाता भी कहते हैं। इस योजना के तहत 10 साल से कम आयु की कन्याओ का खाता पोस्ट ऑफिस, राष्ट्रीय बैंक तथा अन्य एजेंसी के माध्यम से खोला जा सकता है। बेटी के 21 साल के होने पर अकाउंट मैच्योर हो जाता है। सुकन्या समृद्धि योजना में सालाना कम से कम 250 रुपये और अधिकतम 1.50 लाख रुपये जमा किया जा सकता है। इसमें जमा की जाने वाली राशि पर आयकर अधिनियम की धारा 80 सी के तहत कटौती का लाभ मिलता है। इस योजना के आर्थिक के साथ साथ सामाजिक आयाम भी महत्वपूर्ण हैं। इसमे जमा धनराशि पूर्णतया बेटियों के लिए ही होगी, जो उनकी शिक्षा, कैरियर एवं विवाह में उपयोगी होगी। यह योजना बालिकाओं के सशक्तिकरण के द्वारा भविष्य में महिला सशक्तिकरण को भी बढ़ावा देगी।

4. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

व्ही.एम.जुर्री (2001) ने अपने अध्ययन में ''जनजातीय महिलाओं की शिक्षा रोजगार तथा व्यावसायिक परिर्तन का एक अध्ययन'' में यह निष्कर्ष पाया कि आदिवासी महिलाओं में विकास के लिए शिक्षा के प्रसार एवं रोजगार, व्यवसाय आदि में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा बताये गये कार्यक्रमों की जानकारी का विश्लेषण किया गया है। सर्वेक्षण में यह ज्ञात हो चुका है कि विशेष रूप से

Scanned with OKEN Scanner

ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले जनजातियों को सूचना–माध्यमों की कमी के कारण विकास कार्यक्रमों की जानकारी नहीं मिल पाती है।

सी. जयंती (2003) :शहरीकरण के कारण धीरे–धीरे सामाजिक परिदृश्य बदला है और इसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में भी अनुभव किया जा रहा है। समाज के सभी स्तरों पर महिलाएँ भी कामों म ेंभागीदार बन रही हैं आरै उनका योगदान स्वीकार किया जा रहा है। भविष्य में अधिक महिलाएँ परम्परागत रूप में पुरूषों के प्रभुत्व में आने वाले क्षेत्रों में काम करने लगेगी। सरकार ने उदारीकरण का लक्ष्य अपनाकर काफी सीमा तक सामाजिक परिवेश को बदल दिया है। ऐसा आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की अधिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए किया गया है। इससे आय के साधन पैदा हुए है और समाज के सभी वर्ग की महिलाओं में आत्म संतुष्टि या परितोष का भाव विकसित हुआ है। निस्संदेह भविष्य में महिलाएँ अपने बल पर अधिक–अधिक बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठान स्थापित करने में सफल होंगी।

आशा कौशिक (2008) ने अध्ययन किया कि नारी अधिकारों के लिए वैधानिक प्रयासों की श्रृंखला में भारत सरकार की महिला सशक्तिकरण नीति (2000) एक उल्लेखनीय कदम है। भारत सरकार ने महिलाओं की समस्याओं के उचित निराकरण के लिए एक दस वर्षीय योजना प्रस्तुत की है जिसमें नीति निर्धारण एवं निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की सहभागिता, कृषि, उद्योग, अर्थव्यवस्था में स्थिति का आंकलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, आवास, पर्यावरण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी के संदर्भ में महिलाओं की स्थिति बालिका प्रस्थिति, महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा, मीडिया की भूमिका को रेखांकित किया गया है।

मीनाक्षी श्रीवास्तव (2012) के अनुसार आज भारत में कार्यशील महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है और ज्यादा से ज्यादा महिलाएँ घरों से निकलकर रोजगार के क्षेत्र में कदम रख रही है, लेकिन वास्तविकता यह है कि उच्च या

Scanned with OKEN Scanner

मध्यम स्तर पर कार्य करने वाली महिलाओं की संख्या मामूली है जबकि निम्न तथ असंगठित क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिशत बहुत अधिक है। सशक्तिकरण से श्रमिक महिलाएँ दूर हैं। इसलिए महिला एवं बाल विकास विभाग ने उन्हें भी मध्यम और उच्च स्तर पर कामयाब महिला बनाने का अथक प्रयास किया जिसका उदाहरण उनकी विभिन्न योजनाएँ है, जिससे महिलाओं ने काफी उन्नति की है।

प्रमिला कपूर (2016) के अनुसार आजादी के तरंत बाद से ही भारत सरकार ने बालिका शिक्षा की दिशा में गंभीर प्रयास शुरू कर दिए थे। इसी कारण भारत सरकार द्वारा समय–समय पर विभिन्न विभागों, आयोगों एवं समितियों का भी गठन किया गया ताकि शिक्षा की राह में आने वाली बाधाओं को समझा जा सके और फिर उनका निराकरण किया जा सके। सरकार के इन प्रयासों के अच्छे परिणाम देखने को मिले और अब बालिकाओं के बीच शिक्षा का प्रचार–प्रसार अपेक्षा से काफी बढ़ गया है। लेकिन यह संतुष्ट होकर हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाने का समय नहीं है, बालिका शिक्षा की दिशा में हमें अभी काफी कुछ करना है।

5. अध्ययन – क्षेत्र (Study Area)

प्रस्तुत अध्ययन महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका से संबंधित है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में बिहार के समस्तीपुर जिला का चयन किया गया है। अध्ययन का क्षेत्र बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला पर आधारित है। समस्तीपुर बिहार का एक जिला है जो 2904 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है। समस्तीपुर उत्तर में बागमती नदी से घिरा है जो इसे दरभंगा जिले से अलग करती है। पश्चिम में इसकी सीमा वैशाली और मुजफ्फरपुर जिले के कुछ हिस्से से, दक्षिण में गंगा से लगती है, जबकि इसके पूर्व में बेगुसराय और खगड़िया जिले के कुछ हिस्से से लगती है। जिला मुख्यालय समस्तीपुर में स्थित है।

Scanned with OKEN Scanner

इंफ्रास्ट्रक्चर के लिहाज से समस्तीपुर काफी मजबूत है। यह पूर्व मध्य रेलवे (ईसीआर) का मंडल मुख्यालय है। जिले का पटना, कोलकाता, दिल्ली, धनबाद, जमशेदपुर और अन्य महत्वपूर्ण स्थानों से सीधा रेल संपर्क है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 28 जिले से होकर गुजरता है।

समस्तीपुर के लोग मुख्यतः हिन्दी बोलते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले में जनसंख्या घनत्व 1465 प्रति वर्ग किमी है और कुल जनसंख्या 4.25 मिलियन है। जिले में 4 उप–मंडल और 20 ब्लॉक शामिल हैं। इसमें एक नगर परिषद (समस्तीपुर) और दो नगर पंचायत (दलसिंह सराय और रोसरा) हैं। यहां के लोगों में अपनी बच्चियों को प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना से जोड़ने में काफी रूझान देखा गया है। इस योजना से जोड़कर लोग अपनी बच्चियों का भविष्य सुरक्षित रखना चाहते हैं जिससे उनकी बच्चियों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके एवं इसके माध्यम से महिला सशक्तिकरण की सार्थकता सिद्ध हो सके।

6. अध्ययन का उद्देश्य (Objective of the study)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका का विश्लेषण करना है। उपरोक्त अध्ययन से संबंधित उद्देश्य निम्नलिखत है–

(i) महिला सशक्तिकरण में सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका का पता लगाना।

(ii) बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान पर सुकन्या समृद्धि योजना के प्रभाव का अध्ययन करना।

(iii) आमजनों में जागरूकता लाने में प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका को उजागर करना।

7. **उपकल्पना (Hypothesis)**

प्रस्तुत अध्ययन को वैज्ञानिक आधार पर निर्देशित दिशा की ओर ले जाने हेतु कुछ उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया और इन्हीं उपकल्पनाओं को उत्तरदाताओं की सहायता से वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणीकृत करने का प्रयास किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख उपकल्पनाएँ निम्नलिखित है :–

(i) महिला सशक्तिकरण के अन्तर्गत सुकन्या समृद्धि योजना महिलाओं को पुरूषों के बराबर निर्णय लेने की स्वायत्तता को निर्धारित करता हैं ।

(ii) सुकन्या समृद्धि योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की अवधारणा को सफल सिद्ध करने में एक सार्थक पहल साबित हो रही है।

(iii) सुकन्या समृद्धि योजना महिलाओं को सशक्त बनाने में अहम भूमिका निभा रही है। इसके माध्यम से महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक, पोषण, स्वास्थ्य आजीविका, रोजगार के प्रति जागरूक बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

8. **अनुशासन एवं संबद्ध अनुशासन में अनुसंधान कार्य का योगदान**

(Contribution of research work to the discipline & allied discipline)

इस दिशा में यह शोध या अनुसंधान विविध विषयों में गहन और सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करता है, तथा सामाजिक विकास मे सहायक है। यह शोध होने से लोगों के सामाजिक समस्या के निदान और निवारण में सहायक साबित होगा। प्रस्तुत शोध का समाजशास्त्र एवं अन्य अनुशासन, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र में भी योगदान महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध व्यक्तित्व का बौद्धिक विकास और मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है।

Scanned with OKEN Scanner

9. शोध–पद्धतिशास्त्र **(Research Methodology)**

शोध को पूर्ण करने के लिए शोध–प्रारूप की आवश्यकता होती है। इसके अन्तर्गत शोध से सम्बन्धित मौलिक प्रश्न, समस्या, उपकल्पना, निदर्श चयन की प्रक्रिया, सारणीयन इत्यादि शामिल हैं। प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक सह विश्लेषणात्मक शोध प्ररचना पर आधारित है।

तथ्य संकलन (Data Collection)

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक स्रोत का प्राविधिक आधार साक्षात्कार अनुसूची होगा। द्वितीयक स्रोत के आधार सरकारी प्रलेख और सांख्यिकी, गैर–सरकारी प्रलेख सांख्यिकी, उपलब्ध प्रलेखन सामग्री का प्रयोग, ऐतिहासिक स्रोत, अन्तर्वस्तु विश्लेषण, पूर्व के शोधकार्य होगें।

तथ्यों का संकलन, सारणीयन तथा विश्लेषण (Data Processing)

तथ्यों से अर्थपूर्ण परिणाम व सम्बन्ध का आकलन करने हेतु तथ्यों को समजातीय समूह में वर्गीकरण के माध्यम से प्रस्तुत किया जायेगा। तथ्यों का वर्गीकरण सम्पूर्णता की प्रकृति के अनुसार दो प्रकार से हो सकता है, यथा–गुणों के अनुसार वर्गीकरण व सामान्य अभिलक्षणों के आधार पर समंकों का वर्णात्मक रूप में वर्गीकरण किया जा सकता है। वर्ग अंतराल के अनुसार वर्गीकरण – वर्णनात्मक अभिलक्षणों की बजाय संख्यात्मक अभिलक्षण मात्रात्मक प्रघटना को अभिव्यक्त करता है, जिसका विश्लेषण सांख्यिकी इकाइयों के माध्यम से किया जा सकता है। इस प्रकार के तथ्यों को चरों की सांख्यिकी के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है व वर्ग अंतराल के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

अध्ययन का समग्र व निदर्श चयन (Universe and Sampling)

प्रस्तुत शोध के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के द्वारा बिहार के समस्तीपुर जिला के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र का चयन किया जाएगा। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रणाली द्वारा शहरी क्षेत्र से 5 मुहल्लो तथा ग्रामीण क्षेत्र से 5 गाँवों का चयन किया जायेगा। इस आधार पर प्रत्येक मुहल्लों एवं गाँवों से 30–30 सुकन्या समृद्धि योजना का लाभ प्राप्त करने वाली बालिकाओं के माताओं को उत्तरदात्री के रूप में चयन किया जायेगा। इस प्रकार कुल 300 उत्तरदात्रियों का चयन किया जायेगा। चयनित 300 उत्तरदात्रियों के ऊपर सम्पूर्ण सर्वेक्षण संचालित किया जायेगा और साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उनसे अध्ययन से संबंधित प्रश्नों पर तथ्य के रूप में इनकी प्रतिक्रियाएं संकलित की जायेंगी।

शोध कार्य के लिए उपयुक्त उपकरण (Required tools for the Research)

प्रस्तुत शोधकार्य महिलाओं के सशक्तिकरण में प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका से संबंधित है। इस शोधकार्य हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जाना है। अतः साक्षात्कार अनुसूची इस शोधकार्य में प्रयुक्त होनेवाला प्रथम उपकरण होगा। द्वितीय शोधकार्य से जुड़े नैसर्गिक चित्रों, भू–दृश्यों, ग्रामीण महिलाओं के चित्रांकन उनके सामाजिक– आर्थिक आधार पर शोधकार्य करने हेतु कैमरे, मोबाइल, लेपटॉप जैसे उपकरण का प्रयोग वांछनीय होगा। अन्य उपकरणों में टेपरिकार्डर का प्रयोग ग्रामीण समाज के व्यक्तियों के सामूहिक साक्षात्कार हेतु या व्यक्तिगत साक्षात्कार हेतु समय–समय पर आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

10. प्रस्तावित अध्यायीकरण (**Tentative Chapterisation**)

1. अध्याय प्रथम	–	भूमिका
2. अध्याय द्वितीय	–	साहित्य की समीक्षा
3. अध्याय तृतीय	–	अध्ययन क्षेत्र
4. अध्याय चतुर्थ	–	शोध – पद्धतिशास्त्र
5. अध्याय पंचम	–	उत्तरदात्रियों की पृष्ठभूमि
6. अध्याय षष्ठ	–	बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं अभियान पर सुकन्या समृद्धि योजना का प्रभाव
7. अध्याय सप्तम	–	आमजनों में जागरूकता लाने में सुकन्या समृद्धि योजना की भूमिका
8. अध्याय अष्टम	–	सारांश एवं निष्कर्ष।

परिशिष्टः –

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

साक्षात्कार – अनुसूची

Scanned with OKEN Scanner

9. संदर्भ **(References) :**

1. वियोगी (डॉ.) कुसुम (2001), ''दलित महिला कथाकारों की चर्चित कहानियाँ'', ललित प्रकाशन, दिल्ली
2. जुर्री व्ही.एम. (2001), ''जनजातीय महिलाओं की शिक्षा, रोजगार तथा सामाजिक परिवर्तन का एक अध्ययन'' शोध प्रबंध – 2001 पृ. 175.
3. सी. जयन्ती (अगस्त 2003), आर्थिक विकास के नए परिवेश में महिला उद्यमियोंका योगदान, योजना पत्रिका दिल्ली
4. मेनन रितु (2005), ''कर्मठ महिलायें'', नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
5. नतानी प्रकाश नारायण (2010) महिलाओं एवं बालिकाओं के अधिकार, विनायक प्रकाशन जयपुर
6. शुक्ला, मंजु (2011), महिला साक्षरता एवं सशक्तिकरण, भारत प्रकाशन लखनऊ
7. मिश्रा, आर.के. (2011), राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी 2011, भोपाल मध्यप्रदेश
8. श्रीवास्तव, मीनाक्षी (2012), कामकाजी महिलायें वास्तविक स्थिति, हरि प्रकाशन दिल्ली
9. क्पूर, प्रोमिला (2012), स्त्री शिक्षा एक मूल्यांकन, हरि प्रकाशन दिल्ली
10. शर्मा, कविता (2012), ''स्त्री सशक्तिकरण के आयाम'', रजत प्रकाशन नई दिल्ली
11. सक्सेना, वंदना (2013), महिलाओं का संसार और अधिकार, मनीषा प्रकाशन दिल्ली

पर्यवेक्षक

शोधार्थी

Scanned with OKEN Scanner